विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 2o-02-2021

वर्ग षष्ठ शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

प्रत्यय

इस पाठ में हम प्रमुख तद्धित प्रत्ययों का वर्गीकरण करेंगे -

(क) साधारण प्रत्यय - नञ्, स्नञ्, अण् ,ण्य, यञ्, अञ्, ईकक्,यत्

(ख) अपत्यार्थक - यञ्, इञ्, अञ्, अण्, ढक्, यत्, घ, ठक् तथा ण्य।

(ग) सम्बन्धार्थक एवं विकारार्थक - अण्, ठक्, अञ्, मयट्।

(घ) शैषिक - अण, खञ्, छ, कन्, च्वि।

(ङ) परिमाणार्थक एवं संख्यार्थक - वतुप्, मात्रच्, डति, तयप्, तरप्, तमप्, ईयसुन्, इष्ठन् अयच्, अण्।

(च) मत्वर्थीय - मतुप्, इनि, ठन्, इतच्।

(छ) भावार्थक एवं कर्मार्थक - त्व, तल्, इमनिच्, ष्यञ्, अञ्, वति, कन्।

(ज) समूहार्थक - अण्, तल्।

(झ) हितार्थक - छ, यत्।

(ञ) क्रिया विशेषणार्थक - तसिल्, त्रल्, दा, दानीम् थात्, कृत्वसुच्, धा।

(क) साधारण प्रत्यय -अण्, ण्य, नञ्, स्नञ्, यञ्, अञ्, ईकक्,यत्

अण् प्रत्यय - अण् प्रत्यय अनेक अर्थों में होता है, जैसे - अश्वपति का अपत्य, (अपत्य का अर्थ सन्तान होता है, जिसमें पुत्र तथा पुत्री दोनों का बोध होता है।) अश्वपति से उत्पन्न हुआ, अश्वपति का समूह आदि अर्थों में अश्वपति शब्द से अण् प्रत्यय होता है। 'अण्' में ण् की हलन्त्यम्' से इत संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप होकर "अ' शेष बचता है। शब्द के आदि स्वर को वृद्धि तथा अन्तिम स्वर का लोप होकर इस प्रकार शब्द-निर्माण होता है। जैसे -

अश्वपति + अण् = आश्वपत् + अ (ण् का लोप) = आश्वपतम्। इसी प्रकार गणपति से गाणपतम्, धनपति से धानपतम्, पशुपति से पाशुपतम् आदि बनते हैं।